

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 18: भगवान वामन का प्राकट्य

14 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



अदिति के गर्भ से जन्मे परमेश्वर एक छोटे ब्राह्मण बालक का रूप धारण कर बली के महान यज्ञ में चलकर जाते हैं — और बलशाली असुरराज, उनके तेज से चकाचौंध, उनका स्वागत करने और जो वे चाहें वह अर्पित करने को उठ खड़े होते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। अदिति के गर्भ में प्रविष्ट होकर भगवान अब जगत में प्रकट होते हैं: आठवें स्कन्ध का यह अष्टादश अध्याय बताता है कि किस प्रकार भगवान वामन, भगवान के दस प्रमुख अवतारों में पाँचवें, अदिति और कश्यप से जन्म लेते हैं, क्षण भर में एक छोटे ब्राह्मण बालक का रूप धारण करते हैं, और

एक ऐसे यज्ञ की ओर चल पड़ते हैं जो उनके आगमन से सर्वथा बदलने वाला है।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 18 (अष्टादश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान वामन, दिव्य वामनावतार प्रकट होते हैं
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — बली के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: कश्यप का आश्रम; नर्मदा के उत्तरी तट पर भृगुकच्छ, जहाँ बली यज्ञ करते हैं
- केन्द्रीय विषय: भगवान वामन का जन्म; उनका वामन ब्राह्मण बालक रूप; उनका यज्ञोपवीत संस्कार; बली के यज्ञ में उनका आगमन और बली का सादर स्वागत
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 18, श्लोक 1-32
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

सप्तदश अध्याय में भगवान अदिति के पयोव्रत के समापन पर उनके समक्ष प्रकट हुए और उनके पुत्र बनने को सहमत हुए; उनकी उपस्थिति का एक अंश ऋषि कश्यप में और फिर अदिति के गर्भ में प्रविष्ट हुआ, और ब्रह्मा ने अवतरित भगवान की स्तुति की। यह अध्याय दिव्य वामन रूप में जगत में उनके वास्तविक प्रकटन को उठाता है।

भगवान का जन्म

ब्रह्मा द्वारा इस प्रकार स्तुत होकर, भगवान अदिति से अपने पूर्ण वैभव में प्रकट हुए।

श्रीशुक उवाच

इत्थं विरिञ्चस्तुतकर्मवीर्यः

प्रादुर्बभूवामृतभूरदित्याम् ।

चतुर्भुजः शङ्खगदाब्जचक्रः

पिशङ्गवासा नलिनायतेक्षणः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच इत्थं विरिञ्चस्तुतकर्मवीर्यः प्रादुर्बभूवामृतभूरदित्याम् चतुर्भुजः शङ्खगदाब्जचक्रः पिशङ्गवासा नलिनायतेक्षणः

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — इस प्रकार, ब्रह्मा द्वारा जिनके कर्म और पराक्रम की स्तुति हुई, वे भगवान — अमृत के धाम — अदिति से प्रकट हुए, चतुर्भुज, शंख, गदा, कमल और चक्र लिए, पीताम्बरधारी, कमलदल-से विशाल नेत्रों वाले। (स्कन्ध 8, अध्याय 18, श्लोक 1)

उनके जन्म पर दिशाएँ प्रकाशित हो उठीं, जल स्वच्छ हो गया, और समस्त प्राणी आनन्दित हुए; ऋतुओं ने अपना सौन्दर्य प्रकट किया, और स्वर्ग, पृथ्वी तथा अन्तरिक्ष हर्षित हुए। वे भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की मंगलमयी द्वादशी को, विजयकारी अभिजित मुहूर्त में, श्रवण नक्षत्र में प्रकट हुए — एक दिन जो आगे विजया-द्वादशी नाम से जाना गया। दिव्य दुन्दुभियाँ बजीं, अप्सराएँ नाचीं, गन्धर्व गाए, और देवताओं ने अदिति के आश्रम पर पुष्प बरसाए।



परम भगवान अदिति से अपने चतुर्भुज वैभव में, शंख, गदा, कमल और चक्र धारण किए, शुभ विजया-द्वादशी पर प्रकट होते हैं, जब देवता हर्षित होकर आश्रम पर पुष्प-वर्षा करते हैं (श्लोक 1-11)।

परमेश्वर अदिति से अपने चतुर्भुज वैभव में प्रकट होते हैं, शंख, गदा, कमल और चक्र लिए, मंगलमयी विजया-द्वादशी को, जबकि देवता हर्षित होकर आश्रम पर पुष्प बरसाते हैं (श्लोक 1-11)।

भगवान वामन बालक बनते हैं

फिर, अदिति और कश्यप के विस्मय से देखते-देखते, वे भगवान जो रत्नों और शस्त्रों से दीप्यमान प्रकट हुए थे, एक अद्भुत नट की भाँति स्वयं को एक छोटे ब्राह्मण बालक में रूपान्तरित कर लिया।

यत् तद् वपुर्भाति विभूषणायुधै-

रव्यक्तचिद्व्यक्तमधारयद्धरिः ।

बभूव तेनैव स वामनो वटुः

सम्पश्यतोर्दिव्यगतिर्यथा नटः ॥ १२ ॥

यत् तद् वपुर्भाति विभूषणायुधैरव्यक्तचिद्व्यक्तमधारयद्धरिः बभूव तेनैव स वामनो वटुः सम्पश्यतोर्दिव्यगतिर्यथा नटः

अर्थ: वह रूप, आभूषणों और शस्त्रों से देदीप्यमान, जिसे अव्यक्त, शुद्ध-चैतन्य भगवान ने धारण किया था, उसे उन्होंने अब बदल दिया — उनके देखते-देखते एक छोटा ब्राह्मण बालक बन गए, एक अद्भुत गति वाले नट की भाँति। (स्कन्ध 8, अध्याय 18, श्लोक 12)

इस दोहरे प्रकटन में एक सूक्ष्म सिद्धान्त छिपा है। अदिति की गोद में दिखने वाला यह शिशु यहाँ स्वयं अमृत का धाम कहा गया है: वे साधारण जीवों की भाँति जन्म, जरा और मृत्यु से बद्ध होकर शरीर में प्रवेश और त्याग नहीं करते। जब वही रूप तुरन्त एक छोटे, आश्रित-से दिखने वाले बालक में बदल जाता है, तो सन्तों ने सदैव इसे विरोधाभास नहीं अपितु प्रमाण के रूप में देखा है — जैसे एक कुशल नट प्रत्येक भूमिका में पूर्णतः उपस्थित रहता है, वैसे ही भगवान के अनन्त प्रकटन प्रत्येक अपने में पूर्ण हैं, प्रत्येक सर्वांशतः वे स्वयं हैं, कोई एक-दूसरे से अधिक या कम वास्तविक नहीं। इसे समझना कोई छोटी बात नहीं: यही वह बोध है जो जीव को भगवान के रूपों को भौतिक जन्म समझने की भूल से मुक्त करता है, और अन्ततः उसे उन्हीं के नित्य धाम की ओर खींच ले जाता है (श्लोक 1, 12)।

यज्ञोपवीत संस्कार

ऋषियों ने, कश्यप को अग्रणी रखकर, उस दिव्य बालक के समस्त संस्कार सम्पन्न किए। यज्ञोपवीत के समय, सूर्यदेव ने उन्हें गायत्री-मन्त्र सिखाया, बृहस्पति ने उन्हें यज्ञोपवीत दिया, और कश्यप ने मूँज की मेखला। पृथ्वी देवी ने मृगचर्म, चन्द्रदेव ने ब्रह्मचारी का दण्ड, और उनकी माता अदिति ने कौपीन के लिए वस्त्र दिया। ब्रह्मा ने कमण्डलु, सप्तर्षियों ने कुश के तिनके, सरस्वती ने अक्षमाला, कुबेर ने भिक्षापात्र, और स्वयं देवी उमा ने उन्हें भिक्षा दी। इस प्रकार सबसे सम्मानित होकर, वह छोटा ब्राह्मण बालक अपने तेज से समस्त ऋषि-सभा को प्रभाहीन कर गया, और उसने विधिपूर्वक अग्नि की पूजा की।



दिव्य बालक का यज्ञोपवीत संस्कार कश्यप की अध्यक्षता में सम्पन्न होता है; देवता स्वयं अपने उपहार अर्पित करते हैं — गायत्री-मन्त्र, यज्ञोपवीत, मृगचर्म, दण्ड, कमण्डलु और भिक्षा (श्लोक 13-19)।

दिव्य बालक का यज्ञोपवीत संस्कार कश्यप को अग्रणी रखकर सम्पन्न होता है; स्वयं देवता अपने उपहार अर्पित करते हैं — गायत्री-मन्त्र, यज्ञोपवीत, मृगचर्म, दण्ड, कमण्डलु और भिक्षा (श्लोक 13-19)।

वामन बली के यज्ञ में जाते हैं

यह सुनकर कि बलशाली बली भृगुओं द्वारा सम्पन्न अश्वमेध यज्ञों से भगवान की आराधना कर रहे हैं, भगवान वामन नर्मदा के उत्तरी तट पर भृगुकच्छ की यज्ञभूमि की ओर चल पड़े, उनका छोटा रूप मानो प्रत्येक पग पर पृथ्वी को झुकाता हुआ। जब वे प्रविष्ट हुए, भृगु ऋषि और स्वयं बली, उनके तेज से चकाचौंध, सोचने लगे कि क्या सूर्यदेव, अग्निदेव, अथवा सनत्कुमार ऋषि यज्ञ देखने आए हैं।

मौञ्ज्या मेखलया वीतमुपवीताजिनोत्तरम् ।

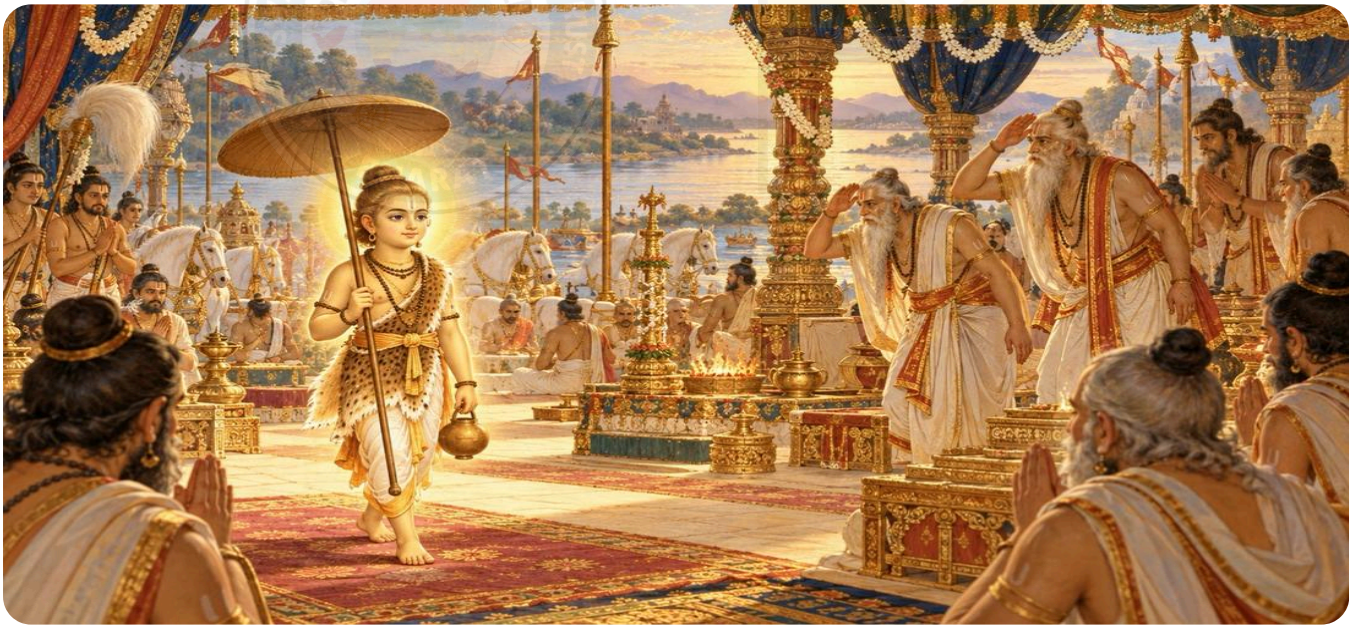
जटिलं वामनं विप्रं मायामाणवकं हरिम् ॥ २४ ॥

प्रविष्टं वीक्ष्य भृगवः सशिष्यास्ते सहाग्निभिः ।

प्रत्यगृह्णन्समुत्थाय सङ्क्षिप्तास्तस्य तेजसा ॥ २५ ॥

मौञ्ज्या मेखलया वीतमुपवीताजिनोत्तरम् जटिलं वामनं विप्रं मायामाणवकं हरिम् प्रविष्टं वीक्ष्य भृगवः सशिष्यास्ते सहाग्निभिः प्रत्यगृह्णन्समुत्थाय सङ्क्षिप्तास्तस्य तेजसा

अर्थ: भगवान हरि को एक छोटे ब्राह्मण बालक रूप में प्रविष्ट देखकर — मूँज की मेखला बाँधे, कन्धे पर मृगचर्म, जटा धारण किए — भृगु, अपने शिष्यों और अग्निहोत्री पुरोहितों सहित, उनके तेज से अभिभूत होकर, अपने आसनों से उठकर उनका स्वागत करते हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 18, श्लोक 24-25)



भगवान वामन, छोटे ब्राह्मण बालक, नर्मदा-तट पर भृगुकच्छ में बली के अश्वमेध यज्ञ-मण्डप में प्रवेश करते हैं, और उनके तेज से मंद पड़े ऋत्विज उनके स्वागत में अपने आसनों से उठ खड़े होते हैं (श्लोक 20-25)।

भगवान वामन, छोटे ब्राह्मण बालक, नर्मदा पर भृगुकच्छ में बली के अश्वमेध यज्ञ के परिसर में प्रवेश करते हैं, और पुरोहित, उनके तेज से चकाचौंध, अपने आसनों से उठकर उनका स्वागत करते हैं (श्लोक 20-25)।

बली भगवान का स्वागत और पूजन करते हैं

मनोहर वामन को देखकर हर्षित होकर, बली ने उन्हें आसन लाकर दिया, उनकी कुशल पूछी, उनके चरण धोए, और उनका पूजन किया। धर्म को जानने वाले उस असुरराज ने अपने सिर पर उस जल को धारण किया जिससे भगवान के चरण धोए गए थे — वही मंगलमय जल जिसे भगवान शिव भक्ति से अपने सिर पर धारण करते हैं। फिर उदार और कृपालु बली ने छोटे ब्राह्मण को जो वे चाहें वह अर्पित किया।

यद् वटो वाञ्छसि तत्प्रतीच्छ मे
त्वामर्थिनं विप्रसुतानुतर्कये ।
गां काञ्चनं गुणवद् धाम मृष्टं
तथान्नपेयमुत वा विप्रकन्याम् ।
ग्रामान् समृद्धांस्तुरगान् गजान् वा
रथांस्तथार्हत्तम सम्प्रतीच्छ ॥ ३२ ॥

यद् यद् वटो वाञ्छसि तत्प्रतीच्छ मे त्वामर्थिनं विप्रसुतानुतर्कये गां काञ्चनं गुणवद् धाम मृष्टं तथान्नपेयमुत वा विप्रकन्याम् ग्रामान् समृद्धांस्तुरगान् गजान् वा रथांस्तथार्हत्तम सम्प्रतीच्छ

अर्थ: बली ने कहा — हे बालक, जो भी तुम चाहो, मुझसे स्वीकार करो; मैं तुम्हें आवश्यकता में आया एक ब्राह्मण-पुत्र मानता हूँ। गौ, स्वर्ण, एक सुसज्जित घर, स्वादिष्ट अन्न और पेय, अथवा एक ब्राह्मण कन्या; समृद्ध ग्राम, अश्व, गज अथवा रथ — स्वीकार करो, हे सर्वश्रेष्ठ। (स्कन्ध 8, अध्याय 18, श्लोक 32)

इस खुले हाथ के प्रस्ताव के साथ मंच सज जाता है। तीनों लोकों के बलशाली विजेता देने को तत्पर खड़े हैं, और विश्व के स्वामी उनके समक्ष एक छोटे बालक रूप में खड़े हैं, सबसे छोटा उपहार माँगने को उद्यत — तीन पग भूमि। अगला अध्याय उस प्रसिद्ध याचना को खोलेगा।



असुरराज बली भगवान वामन का सम्मानपूर्वक स्वागत करता है, उनके चरण धोता है, उनका पूजन करता है, और उदारता से उन्हें जो भी वे चाहें देने का वचन देता है — गौ, स्वर्ण, ग्राम, अश्व या हाथी (श्लोक 26-32)।

असुरराज बली भगवान वामन का सादर स्वागत करते हैं, उनके चरण धोते हैं, उनका पूजन करते हैं, और उदारता से उन्हें जो वे चाहें वह अर्पित करते हैं — गौ, स्वर्ण, ग्राम, अश्व अथवा गज (श्लोक 26-32)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. परमेश्वर विनम्रता में अवतरित होते हैं। अनन्त भगवान, चतुर्भुज वैभव में जन्मे, तुरन्त एक छोटे ब्राह्मण बालक बन जाते हैं। भगवान की महानता केवल भव्यता में नहीं, अपितु छोटे और विनम्र प्रकट होने की उनकी इच्छा में भी प्रकट होती है (श्लोक 1, 12)।
2. भगवान के आगमन पर समस्त सृष्टि हर्षित होती है। वामन के जन्म पर दिशाएँ प्रकाशित होती हैं, ऋतुएँ पुष्पित होती हैं, और देवता पुष्प बरसाते हैं। भगवान का अवतरण समस्त सृष्टि में आनन्द और सामंजस्य लाता है (श्लोक 4-10)।
3. भगवान भी पवित्र व्यवस्था का सम्मान करते हैं। वामन यज्ञोपवीत संस्कार करते हैं और ब्रह्मचारी के पारम्परिक उपहार और कर्तव्य स्वीकार करते हैं। स्वयं भगवान धर्ममय जीवन की परम्पराओं को गौरव देते हैं (श्लोक 13-19)।
4. सच्चा तेज सांसारिक शक्ति को प्रभाहीन करता है। छोटे ब्राह्मण का तेज बलशाली बली और उनके पुरोहितों को अभिभूत कर देता है। आध्यात्मिक प्रकाश प्रत्येक बाह्य महानता को प्रभाहीन कर देता है (श्लोक 22-25)।
5. उदारता और श्रद्धा हृदय को कृपा के लिए तैयार करती हैं। बली भगवान का स्वागत करते हैं, उनके चरण धोते हैं, और सब कुछ अर्पित करते हैं — और यही खुलापन उनके सबसे बड़े आशीर्वाद का द्वार बन जाता है। एक देने वाला, श्रद्धालु हृदय भगवान को निकट खींचता है (श्लोक 27-32)।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय के हृदय में एक सुन्दर विडम्बना है। जो भगवान तीनों लोकों को अपने नाभि में धारण करते हैं, वे एक छोटे ब्राह्मण बालक रूप में प्रकट होना चुनते हैं, इतने लघु कि उनके पग मानो प्रत्येक चरण पर पृथ्वी को झुका देते हैं। असुरराज बली, तीनों लोकों के स्वामी, अपनी शक्ति की पूर्णता में अपने यज्ञ में सिंहासन पर बैठे हैं — और फिर भी, जब छोटा ब्राह्मण प्रवेश करता है, तो बली ही उठते हैं, बली ही आसन लाते हैं, बली ही अपने समक्ष उन छोटे चरणों को धोने घुटनों पर बैठते हैं। यह दृश्य चुपचाप हमारी महानता की सामान्य कसौटियों को उलट देता है। जिसके पास सब कुछ प्रतीत होता है वह उसके समक्ष झुकता है जिसके पास कुछ नहीं प्रतीत होता; बलशाली विजेता विनम्र बालक की सेवा करता है। और बली यह न जानते हुए करते हैं कि बालक वस्तुतः कौन है, केवल एक ब्राह्मण के प्रति अपनी श्रद्धा और अपनी खुले हाथ की उदारता से। यही उनके स्वागत को इतना सुन्दर बनाता है: वे भगवान का सम्मान उनकी पहचान का तनिक भी बोध होने से पूर्व करते हैं। यह एक कोमल स्मरण है कि हम भी भगवान से प्रायः विनम्र और अप्रत्याशित रूपों में मिलते हैं — छोटे में, जरूरतमन्द में, उपेक्षित में — और जो श्रद्धा और उदारता हम उन्हें अर्पित करते हैं वह वस्तुतः उन्हीं को अर्पित होती है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज किसी विनम्र अथवा जरूरतमन्द का स्वागत वैसे करें जैसे बली ने छोटे ब्राह्मण का किया — सच्चे सम्मान, ध्यान और खुले हाथ की दया से, यह न जानते हुए कि उस भेंट में कौन-सी कृपा छिपी हो सकती है। ऐसा करते हुए स्मरण करें कि भगवान स्वयं एक बार एक छोटे बालक रूप में एक राजा के द्वार आए थे, और अपनी दया उन्हें “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” के शब्दों से अर्पित करें। विनम्र के प्रति श्रद्धा को, जैसे बली

के जीवन में हुई, अपने जीवन में भी भगवान की उपस्थिति का द्वार बनने दें।

उपसंहार

आठवें स्कन्ध के इस अष्टादश अध्याय ने हमें एक साथ दो चमत्कार दिखाए हैं: एक ऐसा जन्म जो साधारण जन्म नहीं, और एक भगवान जो उसी राजा के समक्ष लघु बनकर खड़े होने में संतुष्ट हैं जिसे वे आशीर्वाद देने आए हैं। वामन का प्रत्येक रूप — चतुर्भुज शिशु, देदीप्यमान ब्रह्मचारी, बली के द्वार पर धूलिधूसरित यात्री — वही सम्पूर्ण भगवत्ता है, कभी स्वयं से भिन्न नहीं। हम उनसे यह सीखें कि विनम्र दिखने वाले में दिव्यता को पहचानें, और बली की भाँति, यह जाने बिना भी कि किसे, देने को तत्पर हृदय अर्पित करें। वे तीन छोटे पग, जो सब कुछ बदल देंगे, अभी आने बाकी हैं।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, अष्टादश अध्याय, पृष्ठ 810–814।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-18-lord-vamana-the-divine-dwarf-appears-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट